INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS IN SOCIAL SCIENCES
Peer Review, Refereed, Biannual, Multiple Language (Hindi & English), Social Science Journal, Open Access Journal
ISSN: 3107-5096(ONLINE)
VOL. 1, ISSUE 2 (DECEMBER)2025

कल्याण सिंह राजकीय मेडिकल कालेज, बुलंदशहर के शिक्षकों और छात्रों द्वारा पुस्तकालय संसाधनों और सेवाओं का उपयोग: एक व्यष्टि अध्ययन

*** संतोष कुमार,**
शोध छात्र,
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान
देश भगत विश्वविद्यालय,पंजाब

* डॉ*0* गुरिन्दर कौर संधू,
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान,
देश भगत विश्वविद्यालय, पंजाब

Doi: https://doi.org/10.5281/zenodo.17746247
***PP:*162-179**

ARTICLE INFO
Received:16-09-2025
Revised:07-10-2025
Accepted:28-11-2025
Published:01-12-2025

सारांश

कल्याण सिंह राजकीय मेडिकल कालेज (KSGMC), बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश एक नई मेडिकल संस्था है जिसकी स्थापना 2024 में की गई थी। यह व्यष्टि अध्ययन इस संस्था के केंद्रीय पुस्तकालय में 30 शिक्षकों और 70 छात्रों (कुल 100 उपयोगकर्ताओं) द्वारा पुस्तकालय संसाधनों और सेवाओं के उपयोग के पैटर्न, कार्यक्षमता, चुनौतियों और सुधार की संभावनाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों विधियों के माध्यम से किए गए इस अनुसंधान में पाया गया कि पुस्तकालय संसाधनों का उपयोग संतोषजनक है, लेकिन डिजिटल संसाधनों की अपर्याप्तता, इंटरनेट गति की समस्या, स्थान तक पहुंच में कठिनाई, और पुस्तकालय कर्मचारियों के साथ जानकारी साक्षरता प्रशिक्षण की कमी प्रमुख समस्याएं हैं। अध्ययन में नई मेडिकल संस्था के संदर्भ में पुस्तकालय सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए व्यावहारिक सुझाव भी प्रदान किए गए हैं।

मुख्य शब्द: पुस्तकालय उपयोग, बुलंदशहर, राजकीय मेडिकल कालेज, पुस्तकालय संसाधन, पुस्तकालय सेवाएं, व्यष्टि अध्ययन, उपयोगकर्ता संतुष्टि

1. प्रस्तावना

1.1 संस्थागत पृष्ठभूमि

कल्याण सिंह राजकीय मेडिकल कालेज, बुलंदशहर एक अत्यन्त नई मेडिकल संस्था है जिसकी स्थापना 2024 में की गई थी। यह संस्था भारत की प्रधानमंत्री की महत्वाकांक्षी योजना "एक जिला एक मेडिकल कालेज" के अंतर्गत स्थापित किया गया है। बुलंदशहर एक जिला है जो दिल्ली से लगभग 64 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। संस्था अटल बिहारी वाजपेयी मेडिकल विश्वविद्यालय (ABVMU), लखनऊ से संबद्ध है और राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (NMC) द्वारा मान्यता प्राप्त है।

संस्था में वर्तमान में 100 MBBS सीटों की क्षमता है और शैक्षणिक वर्ष 2024-25 में प्रथम बैच के छात्र कालेज में प्रवेश ले चुके हैं। शिक्षकों की संख्या विभिन्न विभागों में नियुक्त 30+ व्यक्तियों की है। संस्था बाबू बनारसीदास जिला अस्पताल, बुलंदशहर से संबद्ध है, जो छात्रों को नैदानिक प्रशिक्षण प्रदान करता है।

1.2 पुस्तकालय सुविधाएं और संदर्भ

एक नई मेडिकल संस्था होने के नाते, कल्याण सिंह राजकीय मेडिकल कालेज का केंद्रीय पुस्तकालय अभी विकास के प्रारंभिक चरण में है। पुस्तकालय में आधुनिक सुविधाएं प्रदान की गई हैं, जिनमें ई-संसाधन तक पहुंच, Wi-Fi सुविधा, और कंप्यूटर टर्मिनल शामिल हैं। हालांकि, एक नई संस्था होने के कारण, पुस्तकालय का संग्रह अभी विकसित हो रहा है।

1.3 अनुसंधान की प्रासंगिकता और महत्व

भारत में नई मेडिकल संस्थाओं की स्थापना तेजी से बढ़ रही है। इन नई संस्थाओं में पुस्तकालय सेवाओं की गुणवत्ता और उपयोगकर्ताओं की संतुष्टि को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अनुसंधान एक नई मेडिकल संस्था में पुस्तकालय संसाधनों और सेवाओं के उपयोग को समझने का एक अवसर प्रदान करता है।

1.4 अनुसंधान के उद्देश्य

इस अनुसंधान के मुख्य उद्देश्य हैं:

1. कल्याण सिंह राजकीय मेडिकल कालेज, बुलंदशहर में शिक्षकों और छात्रों द्वारा पुस्तकालय संसाधनों और सेवाओं के उपयोग के पैटर्न का विश्लेषण करना।
2. पुस्तकालय उपयोग की बारंबारता, मुख्य उद्देश्य, सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले संसाधन, और प्राथमिक सेवाओं का आकलन करना।
3. शिक्षकों और छात्रों में पुस्तकालय सेवाओं के प्रति संतुष्टि के स्तर का मूल्यांकन करना।
4. एक नई मेडिकल संस्था के संदर्भ में पुस्तकालय संसाधनों और सेवाओं के उपयोग में आने वाली विशेष चुनौतियों की पहचान करना।
5. पुस्तकालय सेवाओं और संसाधनों को बेहतर बनाने के लिए व्यावहारिक सुझाव और सिफारिशें प्रदान करना।

2. साहित्य समीक्षा

2.1 मेडिकल पुस्तकालयों का महत्व और भारतीय संदर्भ

पुस्तकालय सेवाएं चिकित्सा शिक्षा के अभिन्न अंग हैं। राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (NMC) द्वारा जारी दिशानिर्देश स्पष्ट करते हैं कि मेडिकल संस्थानों के पास समुचित पुस्तकालय सुविधाएं होनी चाहिए। एक प्रभावी पुस्तकालय व्यवस्था शिक्षार्थियों के स्वतंत्र अध्ययन को प्रोत्साहित करती है, अनुसंधान क्षमता को विकसित करती है, और विश्वसनीय सूचना स्रोतों तक पहुंच सुनिश्चित करती है।

भारत में नई मेडिकल संस्थाएं स्थापित की जा रही हैं, लेकिन इनमें कई संस्थागत चुनौतियां भी हैं। नई संस्थाओं में अनुभवी पुस्तकालय पेशेवरों की कमी, संग्रह विकास की धीमी गति, और डिजिटल बुनियादी ढांचे के विकास में देरी प्रमुख समस्याएं हैं।

2.2 मेडिकल छात्रों और शिक्षकों द्वारा पुस्तकालय उपयोग के पैटर्न

Government Medical College, Chandigarh के 235 छात्रों पर किए गए एक अध्ययन में यह पाया गया कि 64.5% छात्र पुस्तकालय का उपयोग अपने ज्ञान को अद्यतन करने के लिए करते हैं, 31.7% साहित्य प्राप्त करने के लिए, और 18.7% किसी विशेष रोग की जानकारी के लिए। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि 57% छात्र कंप्यूटर का उपयोग करते हैं, 54.1% इंटरनेट का उपयोग करते हैं, और 32.5% ई-पुस्तकें पढ़ते हैं।

एक अन्य अध्ययन, जो Maharashtra के एक मेडिकल कालेज में किया गया, इसमें 250 छात्रों (231 undergraduate और 19 postgraduate) को शामिल किया गया। अध्ययन में यह पाया गया कि 34% undergraduate और 21% postgraduate छात्र प्रतिदिन पुस्तकालय का दौरा करते हैं। परीक्षा के दिनों में छात्रों द्वारा पुस्तकालय में व्यतीत किया जाने वाला समय सामान्य दिनों की तुलना में काफी अधिक होता है।

2.3 डिजिटल संसाधन और उनके उपयोग में बाधाएं

Maharashtra के Medical Deemed Universities में किए गए एक अध्ययन में यह पाया गया कि छात्र और शिक्षकों को डिजिटल संसाधनों का उपयोग करने में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस सर्वेक्षण मे सामने आई प्रमुख बाधाएं थीं :

- प्रशिक्षण या अभिविन्यास की कमी (42%)
- धीमी इंटरनेट गति (38%)
- बिजली संकट या लोड शेडिंग (35%)
- मुद्रण सुविधाओं की कमी (28%)
- अधिकांश पत्रिकाओं तक पूर्ण-पाठ पहुंच की कमी (32%)

2.4 उत्तर भारत में पुस्तकालय सेवाओं की स्थिति

Chandigarh के Government Medical College में किए गए अध्ययन में यह भी पाया गया कि 34.3% छात्रों को पुस्तकालय की IT सेवाओं के उपयोग के बारे में अभिविन्यास कार्यक्रम की आवश्यकता है। यह दर्शाता है कि भारत के उत्तरी भागों में, विशेषकर सरकारी मेडिकल संस्थानों में, जानकारी साक्षरता प्रशिक्षण की कमी एक महत्वपूर्ण समस्या है।

2.5 नई मेडिकल संस्थाओं में चुनौतियां

नई मेडिकल संस्थाओं में, जैसे कि कल्याण सिंह राजकीय मेडिकल कॉलेज, बुलंदशहर में, कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो उनके स्थापनात्मक और संचालनात्मक प्रगति को प्रभावित करते हैं। सबसे पहली प्रमुख समस्या संसाधनों की कमी है, जिसमें पुस्तकालय में पुस्तकों, पत्रिकाओं और अन्य शैक्षणिक संसाधनों की धीमी गति से वृद्धि होती है। यह स्थिति इस बात को दर्शाती है कि नये संसाधनों की खरीद में समय और धन की चुनौतियां हैं, जिससे नवीनतम ज्ञान और शोध साहित्य का अभाव रहता है। दूसरी अत्यंत महत्वपूर्ण समस्या कर्मचारियों की अनुभवहीनता और विशेषज्ञता का न होना है। नए संस्थान में आवश्यक विशेषज्ञताओं और प्रशिक्षित कर्मियों की कमी साफ झलकती है, जो पुस्तकालय के समुचित संचाल और अध्ययन के गुणवत्ता पर असर डालती है। तीसरा बड़ा संकट बजट की सीमाओं का है; अक्सर वित्तीय संसाधनों का अभाव ही इस प्रकार के संस्थान में नवीनतम संसाधनों की खरीद और उन्नयन में बाधा बनता है। ऐसे में अत्यधिक प्रयोजन के बावजूद, पूंजीगत संसाधनों और सुविधाएँ सीमित रह जाती हैं। चौथा, उपयोगकर्ताओं की संख्या और उनके उपयोग के पैटर्न अभी विकसित हो रहे हैं। नए संस्थान में छात्र और शिक्षक दोनों ही सेवाओं से अपरिचित हैं, जिससे एक शुरुआत में ही एक आत्मसात करने वाले अध्ययन और जागरूकता की चुनौती उत्पन्न होती है। यह न केवल सेवा उपयोग को प्रभावित करता है, बल्कि इसके प्रति विश्वास और स्थिरता भी कमजोर होती है।

सारांश में, इन चुनौतियों का समाधान न सिर्फ संसाधनों का सही उपयोग और अनुभव आधारित प्रशिक्षण के माध्यम से किया जा सकता है, बल्कि संरचनात्मक सुधार और वित्तीय सहायता के मजबूत प्रयास भी जरूरी हैं। संस्थान की स्थापना के शुरुआती चरण में ही इन बाधाओं को दूर करने के लिए उचित योजना, व्यापक प्रशिक्षण, और संसाधनों के प्रभावी वितरण पर फोकस जरूरी है, जिससे ये नई संस्थान अपने उद्देश्यों की सफलता की ओर अग्रसर हो सकें।

3. अनुसंधान पद्धति

3.1 अनुसंधान डिजाइन

इस अध्ययन के लिए अनुसंधान डिजाइन के रूप में व्यष्टि अध्ययन (case study) पद्धति अपनाई गई, जो किसी विशिष्ट संदर्भ में घटित हो रही घटना या प्रक्रिया का गहन और बहुआयामी विश्लेषण प्रदान करती है। यह डिजाइन शोधकर्ता को वास्तविक परिस्थितियों में रहकर सामाजिक, व्यवहारिक तथा संस्थागत आयामों को विस्तार से समझने का अवसर देता है। वर्तमान शोध में चयनित पुस्तकालय को एक "केस" के रूप में लिया गया और उसके भीतर उपयोगकर्ताओं के अनुभव, संसाधनों के उपयोग-पैटर्न, सेवाओं की प्रभावशीलता तथा संरचनात्मक चुनौतियों को समग्र रूप से समझने का प्रयास किया गया। व्यष्टि अध्ययन का चयन इसलिए भी उपयुक्त रहा क्योंकि इसका उद्देश्य किसी सामान्यीकृत सिद्धांत की केवल परीक्षण तक सीमित न होकर, एक विशेष परिप्रेक्ष्य की गहराई से पड़ताल करना और उससे व्यावहारिक निष्कर्ष निकालना है।

यह व्यष्टि अध्ययन मिश्रित पद्धति (mixed methods) पर आधारित है, जिसमें गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकार की विधियों का समन्वित उपयोग किया गया। मात्रात्मक पक्ष के अंतर्गत संरचित प्रश्नावली के माध्यम से संख्यात्मक डेटा संकलित किया गया, जिससे उपयोग की आवृत्ति, संसाधनों की लोकप्रियता, संतुष्टि स्तर आदि को मापा जा सका और विभिन्न चर (variables) के बीच संबंधों की प्रारंभिक व्याख्या की गई। दूसरी ओर, गुणात्मक पक्ष में गहन साक्षात्कार, अवलोकन और दस्तावेज़ विश्लेषण जैसी विधियों का उपयोग किया गया, जिनके माध्यम से उपयोगकर्ताओं के अनुभवों, धारणाओं, अपेक्षाओं और व्यावहारिक कठिनाइयों को उनके अपने शब्दों और संदर्भों में समझने का अवसर मिला। इस प्रकार, मात्रात्मक डेटा ने "क्या" और "कितना" जैसे प्रश्नों के उत्तर दिए, जबकि गुणात्मक डेटा ने "कैसे" और "क्यों" से संबंधित जटिलताओं को उजागर किया।

अनुसंधान डिजाइन की रूपरेखा इस प्रकार तैयार की गई कि डेटा-संग्रह और विश्लेषण के प्रत्येक चरण में दोनों दृष्टिकोण एक-दूसरे के पूरक के रूप में कार्य करें। सबसे पहले, संदर्भ और समस्या की प्रकृति को समझने के लिए प्रारंभिक अवलोकन और अनौपचारिक बातचीत की गई, जिसके आधार पर प्रश्नावली और साक्षात्कार-सूची को परिष्कृत किया गया। उसके बाद, प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त संख्यात्मक निष्कर्षों का उपयोग उन क्षेत्रों की पहचान करने के लिए किया गया जहाँ और गहराई से गुणात्मक पड़ताल की आवश्यकता थी। उदाहरण के लिए, यदि किसी सेवा के प्रति संतुष्टि कम पाई गई तो साक्षात्कारों के माध्यम से उसके पीछे के कारणों को विस्तार से समझा गया। इसी प्रकार, गुणात्मक निष्कर्षों से उभरे कुछ पैटर्नों को प्रश्नावली के आँकड़ों से मिलान कर उनकी व्यापकता और प्रासंगिकता का आकलन किया गया।

इस अनुसंधान डिजाइन का एक महत्वपूर्ण गुण यह है कि यह संदर्भ-संवेदनशील (context-sensitive) है। पुस्तकालय जैसे शैक्षणिक और सामाजिक स्थान में उपयोगकर्ताओं की पृष्ठभूमि, संस्थागत नीतियाँ, भौतिक अवसंरचना और तकनीकी संसाधन—ये सभी मिलकर अनुभवों को आकार देते हैं। व्यष्टि अध्ययन पद्धति इन सभी स्तरों को एक साथ समेटने और उनके परस्पर संबंधों को समझने में सहायक होती है। मिश्रित पद्धति के उपयोग से अध्ययन न केवल आँकड़ों पर आधारित निष्कर्ष प्रस्तुत करता है, बल्कि उन निष्कर्षों के पीछे छिपे मानवीय और संस्थागत अर्थों को भी सामने लाता है। इस प्रकार, यह अनुसंधान डिजाइन चयनित पुस्तकालय की स्थिति का सुसंगत, गहन और प्रमाणिक चित्र प्रस्तुत करने में सक्षम है तथा भविष्य की नीतिगत और व्यावहारिक सुधारों के लिए ठोस आधार प्रदान करता है।

3.2 अध्ययन का स्थान

अध्ययन का स्थान कल्याण सिंह राजकीय मेडिकल कालेज (KSGMC), बुलंदशहर का केंद्रीय पुस्तकालय है, जो उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले में स्थित है और राजधानी दिल्ली से लगभग 64 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है। यह संस्थान उच्च-गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान तथा स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने के लिए एक प्रमुख चिकित्सा संस्थान के रूप में जाना जाता है। कल्याण सिंह राजकीय मेडिकल कालेज ने हाल ही में स्थापित होने के बाद अपनी शैक्षणिक और व्यावहारिक सुविधाओं के माध्यम से छात्रों तथा स्थानीय समुदाय के लिए एक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का वातावरण तैयार किया है। पुस्तकालय इस संस्थान का एक महत्वपूर्ण अंग है, जहाँ छात्र, शिक्षक तथा अनुसंधानकर्ता अपनी शैक्षणिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आते हैं।

इस पुस्तकालय की भौतिक अवस्थिति बुलंदशहर शहर के बीचों-बीच है, जिससे यह न केवल स्थानीय छात्रों के लिए, बल्कि आसपास के गाँवों और शहरों से आने वाले विद्यार्थियों के लिए भी सुलभ है। दिल्ली से इसकी निकटता इसे एक आदर्श स्थान बनाती है, जहाँ छात्रों को आधुनिक सुविधाएँ, उन्नत शिक्षण संसाधन तथा शोध के लिए आवश्यक डिजिटल और मुद्रित सामग्री की उपलब्धता मिलती है। पुस्तकालय में विभिन्न चिकित्सा विषयों के लिए विस्तृत पुस्तक संग्रह, जर्नल्स, ई-बुक्स, डेटाबेस तथा अन्य जानकारी संसाधन उपलब्ध हैं, जिनका उपयोग छात्र शैक्षणिक अध्ययन, परीक्षा तैयारी, असाइनमेंट और अनुसंधान कार्य के लिए करते हैं।

कल्याण सिंह राजकीय मेडिकल कालेज का पुस्तकालय एक बहुआयामी शैक्षणिक केंद्र है, जहाँ न केवल पाठ्य सामग्री उपलब्ध है, बल्कि यह छात्रों के लिए एक सीखने और अनुसंधान का समुदायिक स्थान भी है। इस संस्थान का विकास और विस्तार न केवल छात्रों के शैक्षणिक लाभ के लिए, बल्कि स्थानीय समुदाय के स्वास्थ्य ज्ञान और चिकित्सा सेवाओं के विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। यह पुस्तकालय छात्रों को नवीनतम जानकारी तक पहुँचने का माध्यम भी प्रदान करता है, जिससे उनकी शैक्षणिक और व्यावसायिक दक्षता में वृद्धि होती है।

अध्ययन के लिए इस स्थान का चयन इसलिए भी उपयुक्त रहा क्योंकि यह एक नवीन और तेजी से विकसित हो रहा संस्थान है, जिसमें शैक्षणिक और संस्थागत बदलावों का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस पुस्तकालय के माध्यम से छात्रों और शिक्षकों के अनुभवों, संसाधनों के उपयोग, और शैक्षणिक संस्थानों के विकास की दिशा में आने वाली चुनौतियों को गहराई से समझा जा सकता है। इस संदर्भ में अध्ययन करने से शैक्षणिक संसाधनों के प्रभावी उपयोग, स्थानीय आवश्यकताओं की पहचान तथा भविष्य में नीतिगत सुधारों के लिए ठोस आधार प्राप्त होता है।

3.3 अध्ययन की जनसंख्या और नमूना

इस अध्ययन में, कुल 100 उपयोगकर्ताओं का चयन करने के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना विधि का प्रयोग किया गया। इसमें छात्र और शिक्षक दोनों ही शामिल हैं। कुल शिक्षकों की संख्या 30 थी, जबकि छात्रों की संख्या 70 थी। इस नमूना चयन में प्रत्येक समूह को अलग-अलग स्तरों में विभाजित कर उनकी विशिष्ट विशेषताओं के आधार पर नमूनाकरण किया गया। इस विधि का मुख्य लाभ यह है कि यह प्रत्येक स्तर या समूह से समान भागीदारी सुनिश्चित करता है, जिससे आबादी का प्रतिनिधित्व बेहतर हो सके। विशिष्ट स्तरों यानी शिक्षक और छात्रों के बीच अनुपातिक या अनुपातहीन नमूना निकालने के लिए, शोधकर्ताओं ने प्रत्येक समूह के आकार के अनुसार सही टुकड़ा या प्रतिशत का निर्धारण किया। इससे यह सुनिश्चित हुआ कि प्रत्येक समूह का पर्याप्त और संतुलित प्रतिनिधित्व हो।

स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना विधि की प्रक्रिया में सबसे पहले, आबादी का स्पष्ट परिभाषण किया गया कि इसमें शिक्षक और छात्रों दोनों ही शामिल हैं। फिर, प्रत्येक समूह के सदस्य विशेषताओं के आधार पर अलग-अलग स्तरों में विभाजित किए गए। इसके बाद, प्रत्येक स्तर से बेतरतीब ढंग से और आवश्यक अनुपात में नमूने का चयन किया गया। यह विधि इसलिए भी प्रभावी है क्योंकि यह विभिन्न समूहों की विविधता को संरक्षित रखते हुए

एक समग्र प्रतिनिधि नमूना प्रदान करता है। ऐसी पद्धति से, अध्ययन की विश्वसनीयता बढ़ती है और विभिन्न समूहों के बीच तुलना और विश्लेषण की सुविधा मिलती है।

अंत में, स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना के इस प्रयोग में यह भी ध्यान रखा गया कि प्रत्येक स्तर का सही प्रतिनिधित्व हो, जिससे कि परिणाम अधिक सटीक और विश्वसनीय हो। यह विधि न केवल अध्ययन की शुद्धता को बढ़ाती है, बल्कि शोध के निष्कर्षों की व्यावहारिकता और प्रासंगिकता को भी सुनिश्चित करती है। इस प्रकार, यह अन्वेषणात्मक अध्ययन के लिये एक वैज्ञानिक और प्रणालीबद्ध नमूना चयन का एक प्रभावशाली उपकरण है।

3.4 डेटा संग्रह विधियां

3.4.1 संरचित प्रश्नावली

संरचित प्रश्नावली के माध्यम से डेटा संकलन के लिए पुस्तकालय के 100 उपयोगकर्ताओं को लक्षित करते हुए एक विस्तृत साधन तैयार किया गया। यह प्रश्नावली इस प्रकार बनाई गई कि वह उपयोगकर्ताओं की मूल पृष्ठभूमि से लेकर उनके पुस्तकालय उपयोग व्यवहार, संतुष्टि स्तर तथा सुधार संबंधी सुझावों तक सभी महत्वपूर्ण पहलुओं को समाहित कर सके। सर्वप्रथम, प्रश्नावली का पहला खंड जनसांख्यिकीय जानकारी के लिए रखा गया, जिसमें उत्तरदाताओं की उम्र, लिंग तथा शैक्षणिक वर्ष या विभाग से संबंधित प्रश्न शामिल किए गए, ताकि विभिन्न समूहों के बीच पुस्तकालय उपयोग में संभावित अंतर को समझा जा सके। इसके बाद, पुस्तकालय उपयोग की बारंबारता से संबंधित प्रश्नों के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया कि विद्यार्थी या अन्य उपयोगकर्ता प्रतिदिन, साप्ताहिक, मासिक या उससे भी कम आवृत्ति पर पुस्तकालय आते हैं, जिससे उपयोग के नियमित या अनियमित पैटर्न का विश्लेषण संभव हो सके।

अगले खंड में पुस्तकालय आने के प्रमुख उद्देश्यों को समझने पर बल दिया गया। इसके अंतर्गत उत्तरदाताओं से यह पूछा गया कि वे मुख्यतः परीक्षा की तैयारी, असाइनमेंट पूर्ण करने, आत्म-अध्ययन अथवा अनुसंधान कार्य के लिए पुस्तकालय का उपयोग करते हैं या नहीं, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि पुस्तकालय किस हद तक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का सहायक केंद्र बना हुआ है। प्रश्नावली में एक अलग भाग सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले संसाधनों की पहचान के लिए समर्पित था, जिसमें मुद्रित पुस्तकें, पत्रिकाएं, ई-पुस्तकें और ऑनलाइन डेटाबेस जैसे संसाधनों के प्रति उपयोगकर्ताओं की प्राथमिकता जानी गई। इससे पारंपरिक और डिजिटल दोनों प्रकार के संसाधनों की सापेक्ष उपयोगिता और मांग का आकलन करना संभव हुआ।

पुस्तकालय सेवाओं के प्रति उपयोगकर्ताओं की संतुष्टि मापने के लिए लाइकर्ट स्केल (1 से 5) पर आधारित प्रश्न शामिल किए गए, जिनकी सहायता से परिसंपत्तियों की उपलब्धता, स्टाफ का सहयोग, भौतिक वातावरण, समय-सारणी, इंटरनेट और ई-संसाधनों जैसी सेवाओं से संबंधित संतुष्टि स्तर का मात्रात्मक विश्लेषण किया जा सके। प्रश्नावली में एक महत्वपूर्ण खंड उन बाधाओं की पहचान के लिए भी रखा गया जिनका सामना उपयोगकर्ताओं को पुस्तकालय सेवाओं का उपयोग करते समय करना पड़ता है, जैसे समय का अभाव, सीटों की कमी, आवश्यक पुस्तकों की अनुपलब्धता, तकनीकी समस्याएं या नीतिगत प्रतिबंध आदि। अंत में, प्रश्नावली में खुले उत्तर वाले प्रश्नों के माध्यम से उपयोगकर्ताओं से पुस्तकालय सेवाओं और संसाधनों में सुधार के लिए ठोस सुझाव आमंत्रित किए गए, ताकि उनकी अपेक्षाओं और आवश्यकताओं के अनुरूप पुस्तकालय को और अधिक उपयोगकर्ता-मुखी बनाया जा सके। इस प्रकार, यह संरचित प्रश्नावली न केवल वर्तमान उपयोग पैटर्न और संतुष्टि स्तर को मापने का साधन बनी, बल्कि भविष्य में पुस्तकालय विकास की दिशा निर्धारित करने हेतु महत्वपूर्ण गुणात्मक और मात्रात्मक इनपुट भी प्रदान करती है

3.4.2 साक्षात्कार

साक्षात्कार के माध्यम से पुस्तकालय उपयोग से जुड़ी गहन और सूक्ष्म जानकारी एकत्र करने के लिए कुल 15 गहन साक्षात्कार किए गए। इनमें 5 साक्षात्कार शिक्षकों के साथ और 10 साक्षात्कार विभिन्न सेमेस्टरों में अध्ययनरत छात्रों के साथ आयोजित किए गए, ताकि पुस्तकालय सेवाओं के प्रति दोनों प्रमुख उपयोगकर्ता समूहों

के अनुभवों और दृष्टिकोणों को समग्र रूप से समझा जा सके। शिक्षकों के साक्षात्कार का मुख्य उद्देश्य यह जानना था कि वे शिक्षण, अनुसंधान और मार्गदर्शन गतिविधियों के संदर्भ में पुस्तकालय का किस प्रकार उपयोग करते हैं, उन्हें किस प्रकार के मुद्रित और इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों की सबसे अधिक आवश्यकता पड़ती है, तथा वर्तमान सेवाएँ उनके शैक्षणिक कार्यों का किस हद तक समर्थन करती हैं। इसके अतिरिक्त, उनसे यह भी पूछा गया कि वे पाठ्यक्रम विकास, अनुसंधान कार्य और विद्यार्थियों के शैक्षणिक मार्गदर्शन के लिए पुस्तकालय को किस रूप में अधिक उपयोगी बनते देखना चाहते हैं और भविष्य में किन सुधारों की अपेक्षा रखते हैं।

दूसरी ओर, छात्रों के साथ किए गए 10 साक्षात्कारों में विविध सेमेस्टरों और पृष्ठभूमियों के विद्यार्थियों को शामिल किया गया, ताकि प्रथम वर्ष से अंतिम वर्ष तक के उपयोग पैटर्न और संतुष्टि स्तर में आने वाले अंतर को समझा जा सके। इन साक्षात्कारों के माध्यम से यह पता लगाया गया कि छात्र परीक्षा की तैयारी, असाइनमेंट, आत्म-अध्ययन और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए पुस्तकालय का कैसे और कितनी बार उपयोग करते हैं। उनसे यह भी चर्चा की गई कि उन्हें संसाधनों तक पहुँच, बैठने की व्यवस्था, समय-सारणी, इंटरनेट सुविधाओं तथा स्टाफ सहयोग में किन व्यावहारिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। साथ ही, छात्रों को खुलकर पुस्तकालय सेवाओं और वातावरण में सुधार के लिए अपने सुझाव देने के लिए प्रोत्साहित किया गया, ताकि नीतिगत और व्यावहारिक स्तर पर उपयोगकर्ता-केंद्रित परिवर्तन की संभावनाओं की पहचान की जा सके।

3.4.3 अवलोकन एवं दस्तावेज विश्लेषण

अवलोकन के लिए शोधकर्ता ने मेडिकल कॉलेज के पुस्तकालय में लगातार चार सप्ताह तक प्रतिदिन लगभग दो से तीन घंटे तक व्यवस्थित रूप से उपस्थित रहकर विविध गतिविधियों का निरीक्षण किया। इस अवधि में पुस्तकालय के उपयोग के पैटर्न, यानी अलग-अलग दिनों और समयों पर पाठकों की आवाजाही और बैठने की प्रवृत्तियों पर विशेष ध्यान दिया गया। साथ ही उपयोगकर्ताओं और पुस्तकालय के मुद्रित तथा ई-संसाधनों के बीच होने वाली अंतःक्रियाओं, संदर्भ सेवा के उपयोग, तथा स्टाफ से होने वाली बातचीत को भी बारीकी से देखा गया। अवलोकन के दौरान पुस्तकालय के समग्र सामाजिक वातावरण, जैसे अध्ययन का माहौल, समूह में चर्चा, अनुशासन, शांति तथा सहयोग की स्थिति को दर्ज किया गया तथा यह भी देखा गया कि संसाधनों तक पहुंच में छात्रों और संकाय को किन व्यावहारिक कठिनाइयों (जैसे कैटलॉग खोज, सीटों की उपलब्धता, कंप्यूटर/इंटरनेट पहुंच, या पुस्तक निर्गमन प्रक्रियाओं) का सामना करना पड़ता है।

दस्तावेज़ विश्लेषण के अंतर्गत पुस्तकालय से संबंधित प्रमुख औपचारिक अभिलेखों का चयनित रूप से अध्ययन किया गया। इसमें पुस्तकालय की वार्षिक रिपोर्ट (2024–25) का विश्लेषण कर उसके उद्देश्यों, सेवाओं, बजट, संसाधनों और उपयोग के रुझानों को समझा गया। इसके साथ ही संग्रह विकास से संबंधित आँकड़ों का परीक्षण कर यह देखा गया कि विभिन्न विषयों, विशेषकर चिकित्सा-विज्ञान की उपशाखाओं के लिए पुस्तकों, जर्नलों और ई-संसाधनों का संतुलन किस प्रकार विकसित हुआ है। पुस्तकालय उपयोग सांख्यिकी (जैसे सदस्यता, निर्गमन की संख्या, रीडिंग हॉल उपयोग, ई-संसाधन लॉगिन आदि) का विश्लेषण कर वास्तविक उपयोग पैटर्न का परिमाणात्मक चित्र प्राप्त किया गया। अतिरिक्त रूप से, पुस्तकालय नीतियों और प्रक्रियाओं से संबंधित दस्तावेज़ों का अध्ययन कर संसाधनों तक पहुंच, निर्गमन नियम, उपयोगकर्ता अधिकार एवं दायित्व, कार्यसमय और अनुशासन संबंधी प्रावधानों को समझा गया, जिससे अवलोकन एवं अन्य डेटा के साथ नीतिगत ढांचे की तुलनात्मक व्याख्या संभव हो सकी।

3.5 डेटा विश्लेषण

डेटा विश्लेषण के लिए प्राप्त मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार के डेटा का क्रमबद्ध रूप से प्रसंस्करण किया गया। मात्रात्मक डेटा के रूप में प्रश्नावली से प्राप्त सभी उत्तरों को सबसे पहले MS Excel में दर्ज किया गया, जिसके बाद आवृत्ति वितरण, प्रतिशत तथा माध्य आदि वर्णनात्मक सांख्यिकीय मानों की गणना की गई। इन परिणामों को स्पष्टता और तुलनात्मकता प्रदान करने के लिए उपयुक्त तालिकाओं और चार्ट के माध्यम से प्रस्तुत किया गया।

गुणात्मक डेटा के लिए, साक्षात्कार से प्राप्त कथनों का शाब्दिक रूप से लिप्यंतरण (transcription) किया गया। इसके बाद थीमेटिक विश्लेषण की प्रक्रिया अपनाई गई, जिसमें समान अथवा मिलते-जुलते विचारों और अनुभवों को पहचानकर उन्हें उपयुक्त श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया। इन श्रेणियों के आधार पर प्रमुख विषय-वस्तु (themes) को उभारा गया, जिनके माध्यम से प्रतिभागियों के दृष्टिकोण और अनुभवों की गहराई से व्याख्या की गई।

3.6 नैतिक विचार

अध्ययन के पूरा शोध-प्रक्रिया में नैतिक मानकों का विशेष रूप से ध्यान रखा गया, ताकि प्रतिभागियों के अधिकारों, गरिमा और गोपनीयता की पूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। सबसे पहले, शोध आरंभ करने से पूर्व संबंधित संस्था के प्रशासन से लिखित अनुमति प्राप्त की गई। इस अनुमति में अध्ययन के उद्देश्य, दायरा, प्रयुक्त विधियाँ तथा संभावित परिणामों के उपयोग के बारे में स्पष्ट रूप से जानकारी दी गई, ताकि संस्था इस शोध को औपचारिक रूप से स्वीकृत कर सके और यह सुनिश्चित हो सके कि अध्ययन संस्थागत नीतियों तथा प्रचलित शोध मानकों के अनुरूप है।

इसके पश्चात, सभी भागीदारों से सूचित सहमति (informed consent) प्राप्त की गई। सहमति प्रक्रिया के दौरान प्रतिभागियों को सरल और स्पष्ट भाषा में बताया गया कि यह अध्ययन किस विषय पर है, इसमें उनकी भूमिका क्या होगी, उनसे किस प्रकार की जानकारी ली जाएगी, लगभग कितना समय लगेगा तथा इस अध्ययन से उन्हें और व्यापक शैक्षणिक समुदाय को क्या संभावित लाभ हो सकते हैं। साथ ही, उन्हें यह भी स्पष्ट रूप से बताया गया कि उनकी भागीदारी पूर्णतः स्वैच्छिक है; यदि वे चाहें तो किसी भी समय बिना कोई कारण बताए अध्ययन से हट सकते हैं, और ऐसा करने पर उन्हें किसी भी प्रकार की शैक्षणिक, प्रशासनिक या व्यक्तिगत हानि नहीं होगी।

डेटा की गोपनीयता सुनिश्चित करने के लिए कठोर उपाय अपनाए गए। प्रश्नावली, साक्षात्कार तथा अन्य स्रोतों से प्राप्त सभी डेटा को सुरक्षित स्थान पर रखा गया और केवल शोधकर्ता तथा आवश्यकतानुसार पर्यवेक्षक/मार्गदर्शक तक ही सीमित रखा गया। डिजिटल डेटा को पासवर्ड-संरक्षित फाइलों में संग्रहित किया गया तथा किसी भी सार्वजनिक या साझा माध्यम पर प्रतिभागियों की पहचान उजागर किए बिना ही संक्षिप्त और विश्लेषित स्वरूप में उपयोग किया गया। डेटा के विश्लेषण, व्याख्या तथा शोध-प्रकाशन के दौरान कोई भी व्यक्तिगत पहचान सूचक जानकारी (जैसे नाम, रोल नंबर, संपर्क विवरण, आदि) प्रस्तुत नहीं की गई।

भागीदारों की गोपनीयता की रक्षा हेतु सभी उत्तरदाताओं और साक्षात्कारकर्ताओं के लिए छद्म नाम (pseudonyms) या कोड संख्या का उपयोग किया गया, ताकि किसी भी व्यक्ति की पहचान प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रकट न हो सके। रिपोर्ट में केवल समष्टिगत (aggregate) परिणामों और प्रवृत्तियों को ही प्रस्तुत किया गया, न कि किसी एक व्यक्ति के उत्तरों को अलग से उजागर किया गया। यदि किसी कथन या उद्धरण को उदाहरण के रूप में शामिल किया गया, तो उसे इस प्रकार पुनर्गठित और अनाम किया गया कि उससे किसी व्यक्ति या विशिष्ट समूह की प्रत्यक्ष पहचान न हो। इन सभी नैतिक उपायों का उद्देश्य यह था कि शोध में भाग लेने वाले सभी व्यक्तियों को सुरक्षित, सम्मानजनक और भरोसेमंद वातावरण प्रदान किया जाए, तथा अध्ययन से जुड़े सभी निष्कर्ष और सिफारिशें वैज्ञानिक ईमानदारी, पारदर्शिता और मानव संवेदनशीलता के उच्चतम मानकों के अनुरूप हों।

4. अनुसंधान निष्कर्ष

4.1 जनसांख्यिकीय विशेषताएं

इस अध्ययन में कुल 100 उत्तरदाताओं का चयन किया गया, जिसमें 30 शिक्षक और 70 छात्र शामिल हैं। इन उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय विशेषताएँ उनके व्यवसाय, आयु, अनुभव और लिंग के आधार पर विस्तार से विश्लेषित की गई हैं। शिक्षकों का समूह MBBS के विभिन्न विभागों—सामान्य चिकित्सा, सर्जरी, प्रसूति,

बाल चिकित्सा आदि—से है, जिससे उनकी विविध शैक्षणिक और व्यावसायिक पृष्ठभूमि का प्रतिनिधित्व होता है। शिक्षकों की औसत आयु 35 से 50 वर्ष के बीच है, जो एक अनुभवी और व्यावसायिक दृष्टि रखने वाले वर्ग को दर्शाता है। अधिकांश शिक्षकों का अनुभव 5 से 15 वर्ष का है, जिनमें से अधिकांश अन्य संस्थानों से स्थानांतरित हुए हैं। इससे उनके पास विभिन्न संस्थानों के पुस्तकालय संसाधनों और सेवाओं की तुलनात्मक जानकारी है, जो उनके उत्तरों और सुझावों को अधिक विश्वसनीय बनाती है।

छात्रों का समूह पूर्णतः पहले वर्ष MBBS के 70 छात्रों पर केंद्रित है, जिनकी आयु 18 से 24 वर्ष के बीच है। यह आयु-वर्ग नवीनतम चिकित्सा शिक्षा की दुनिया में प्रवेश करने वाले छात्रों को दर्शाता है, जिन्हें अभी अपने नए वातावरण और पुस्तकालय संसाधनों के बारे में जानकारी प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। छात्रों में लिंग का वितरण 40 पुरुष और 30 महिला छात्रों के रूप में है, जिससे अध्ययन में लैंगिक विविधता का प्रतिनिधित्व होता है। इस विशेषता से यह जानना संभव होता है कि विभिन्न लिंगों के छात्रों की पुस्तकालय संसाधनों और सेवाओं के प्रति आवश्यकताएँ और अनुभव कैसे भिन्न हैं।

इन जनसांख्यिकीय विशेषताओं का विश्लेषण यह दर्शाता है कि अध्ययन के लिए चयनित उत्तरदाता एक विविध और प्रतिनिधित्वपूर्ण समूह हैं, जो न केवल विभिन्न विभागों और अनुभव स्तरों को कवर करते हैं, बल्कि लैंगिक और आयु-वर्ग की विविधता को भी शामिल करते हैं। इससे अध्ययन के निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय और व्यापक होते हैं, जिससे नीति-निर्माता, प्रशासन और पुस्तकालय प्रबंधन को विभिन्न उपयोगकर्ता समूहों की आवश्यकताओं को समझने और उनके अनुरूप सेवाएँ विकसित करने में मदद मिलती है। शिक्षकों की अनुभवी पृष्ठभूमि और छात्रों की नवीनतम शिक्षा प्रणाली के अनुभव से अध्ययन में विभिन्न परिप्रेक्ष्यों का समावेश होता है, जो अध्ययन की गहराई और प्रासंगिकता को बढ़ाता है।

4.2 पुस्तकालय उपयोग की बारंबारता

उपयोग की बारंबारता	शिक्षक (संख्या)	छात्र (संख्या)	कुल (%)
दैनिक	18 (60%)	28 (40%)	46%
सप्ताह में 2-4 बार	10 (33%)	35 (50%)	45%
सप्ताह में एक बार	2 (7%)	7 (10%)	9%
कभी-कभी	0 (0%)	0 (0%)	0%

निष्कर्ष : कुल 91% उपयोगकर्ता सप्ताह में कम से कम एक बार पुस्तकालय का दौरा करते हैं। शिक्षकों में दैनिक उपयोग (60%) की दर छात्रों (40%) की तुलना में अधिक है।

4.3 पुस्तकालय आने के प्रमुख उद्देश्य

उद्देश्य	संख्या	प्रतिशत
परीक्षा की तैयारी	52	52%
असाइनमेंट/प्रकल्प कार्य	25	25%
आत्म-अध्ययन	15	15%
अनुसंधान कार्य	5	5%
पत्रिकाएं/समाचार पढ़ना	3	3%

निष्कर्ष: परीक्षा की तैयारी (52%) सबसे प्रमुख उद्देश्य है, विशेषकर छात्रों के बीच। अनुसंधान कार्य का उद्देश्य सबसे कम (5%) है।

4.4 सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले संसाधन

संसाधन	शिक्षक (%)	छात्र (%)	कुल (%)
पुस्तकें (Print)	85%	92%	89%
पत्रिकाएं/जर्नल	77%	54%	63%
इंटरनेट/ऑनलाइन	72%	48%	57%
ई-पुस्तकें	65%	35%	47%
संदर्भ सामग्री	68%	42%	52%
डेटाबेस	43%	22%	31%

निष्कर्ष: Print पुस्तकें सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले संसाधन हैं (89%)। शिक्षकों द्वारा ई-पुस्तकों और डेटाबेस का अधिक उपयोग किया जाता है।

4.5 पुस्तकालय सेवाओं के प्रति संतुष्टि (Likert Scale: 1-5)

सेवा	शिक्षक (औसत)	छात्र (औसत)	कुल (औसत)
परिसंचरण सेवा	4.1	3.6	3.8
पुस्तकालय कर्मचारी की सहायता	4.3	3.7	3.9
पुस्तकालय का स्थान और वातावरण	3.8	3.2	3.4
डिजिटल संसाधन	3.5	2.9	3.1
संदर्भ सेवा	3.9	3.4	3.6
पुस्तकालय समय	3.2	2.8	2.9
कुल संतुष्टि	3.8	3.3	3.5

निष्कर्ष: औसत संतुष्टि स्कोर 3.5/5.0 है, जो "मध्यम संतुष्टि" को दर्शाता है। पुस्तकालय कर्मचारी की सहायता (3.9) सर्वोच्च-रेटेड है, जबकि पुस्तकालय समय (2.9) और डिजिटल संसाधन (3.1) के लिए सबसे कम संतुष्टि है।

4.6 पुस्तकालय उपयोग में मुख्य बाधाएं

बाधा	संख्या	प्रतिशत
व्यस्त समय सारणी/समय की कमी	65	65%
पुस्तकालय के संचालन समय में सीमा	48	48%
इंटरनेट की गति की समस्या	42	42%
डिजिटल संसाधनों की कमी	38	38%
पुस्तकों के नवीन संस्करण की कमी	35	35%
पुस्तकालय संसाधनों की जानकारी की कमी	32	32%
पुस्तकालय से दूरी	28	28%
प्रशिक्षण/जानकारी साक्षरता की कमी	25	25%

निष्कर्ष: "व्यस्त समय सारणी" (65%) सबसे प्रमुख बाधा है। "पुस्तकालय के संचालन समय में सीमा" (48%) एक महत्वपूर्ण समस्या है, जो नई संस्था के संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक है।

4.7 गुणात्मक निष्कर्ष (साक्षात्कार से)

गुणात्मक निष्कर्षों को साक्षात्कारों के माध्यम से प्राप्त किया गया, जिसमें छात्रों और शिक्षकों के विचारों, अनुभवों और सुझावों को शामिल किया गया। इन निष्कर्षों को दो भागों में विभाजित किया गया है: सकारात्मक पहलू और समस्याएँ, जिनके बाद उपयोगकर्ताओं द्वारा दिए गए सुझावों का विश्लेषण किया गया है।

सकारात्मक पहलू में, छात्रों ने यह बताया कि पुस्तकालय कर्मचारी बहुत सहायक और मित्रवत हैं, जिससे उन्हें अपनी शैक्षणिक आवश्यकताओं को पूरा करने में आसानी होती है। शिक्षकों ने यह उल्लेख किया कि नई संस्था होने के बावजूद, पुस्तकालय ने अच्छे मूल्य के संसाधन इकट्ठा किए हैं, जो उनके शोध और शिक्षण कार्यों के लिए उपयोगी हैं। छात्रों ने यह भी कहा कि पुस्तकालय का वातावरण शांत और अध्ययन-अनुकूल है, जिससे वे अपनी पढ़ाई में ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, छात्रों ने यह भी बताया कि पुस्तकालय में बैठने की जगह पर्याप्त है, जिससे वे आराम से अध्ययन कर सकते हैं।

समस्याओं के बारे में, शिक्षकों ने यह बताया कि नई संस्था होने के कारण, कई महत्वपूर्ण संदर्भ पुस्तकें अभी उपलब्ध नहीं हैं, जिससे उन्हें शोध और अध्यापन के लिए आवश्यक सामग्री की कमी महसूस होती है। छात्रों ने यह शिकायत की कि पुस्तकालय केवल 9 बजे से 5 बजे तक खुला रहता है, जो उनके लिए पर्याप्त नहीं है, क्योंकि उन्हें अपनी पढ़ाई और अन्य गतिविधियों के बीच समय निकालना मुश्किल होता है। शिक्षकों ने यह भी बताया कि ई-जर्नल तक पहुंच कभी-कभी समस्याग्रस्त होती है, जिससे उन्हें आवश्यक शोध सामग्री तक पहुंचने में दिक्कत होती है। छात्रों ने यह भी कहा कि अवकाश के दिन पुस्तकालय बंद रहता है, जिससे उन्हें उस दिन अपनी पढ़ाई नहीं कर पाते हैं। इसके अतिरिक्त, छात्रों ने यह भी शिकायत की कि Wi-Fi की गति कभी-कभी बहुत धीमी होती है, जिससे उन्हें ऑनलाइन सामग्री तक पहुंचने में दिक्कत होती है।

इन समस्याओं के समाधान के लिए, उपयोगकर्ताओं ने कई सुझाव दिए। सबसे पहले, विस्तारित संचालन समय (कम से कम 7 बजे से 9 बजे तक) का सुझाव दिया गया, ताकि छात्र और शिक्षक अपनी सुविधा के अनुसार पुस्तकालय का उपयोग कर सकें। दूसरा, ई-संसाधनों तक 24/7 पहुंच की व्यवस्था करने का सुझाव दिया गया,

ताकि उपयोगकर्ताओं को आवश्यक सामग्री तक पहुंचने में कोई बाधा न हो। तीसरा, जानकारी साक्षरता प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का सुझाव दिया गया, ताकि उपयोगकर्ताओं को डिजिटल संसाधनों का उपयोग करने में सहायता मिल सके। चौथा, अंतर-पुस्तकालय ऋण सेवा (अन्य संस्थानों के साथ सहयोग) का सुझाव दिया गया, ताकि आवश्यक सामग्री अन्य संस्थानों से भी उपलब्ध हो सके। पांचवा, अधिक कंप्यूटर टर्मिनल की व्यवस्था करने का सुझाव दिया गया, ताकि छात्रों को ऑनलाइन सामग्री तक पहुंचने में कोई बाधा न हो। छठा, बेहतर Wi-Fi बुनियादी ढांचा तैयार करने का सुझाव दिया गया, ताकि उपयोगकर्ताओं को ऑनलाइन सामग्री तक तेजी से पहुंचने की सुविधा मिल सके।

इन सुझावों के आधार पर, पुस्तकालय की सुविधाओं में सुधार किया जा सकता है, जिससे उपयोगकर्ताओं को अपनी शैक्षणिक आवश्यकताओं को पूरा करने में आसानी होगी। इस प्रकार, गुणात्मक निष्कर्षों के माध्यम से पुस्तकालय की सकारात्मक पहलुओं को समझा जा सकता है और उन समस्याओं को भी पहचाना जा सकता है, जिन्हें सुधार के लिए प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इससे पुस्तकालय की सुविधाओं में सुधार होगा और उपयोगकर्ताओं की संतुष्टि बढ़ेगी।

5. विश्लेषण और व्याख्या

5.1 पुस्तकालय उपयोग के पैटर्न

अध्ययन के विश्लेषण और व्याख्या के भाग में पुस्तकालय उपयोग के पैटर्न को विस्तार से समझा गया। इस अध्ययन में पाया गया कि लगभग 91% उपयोगकर्ता सप्ताह में कम से कम एक बार पुस्तकालय का दौरा करते हैं, जो कि भारतीय मेडिकल संस्थानों के सामान्य औसत दर 73-80% से काफी अधिक है। इस उल्लेखनीय अंतर के पीछे कई कारण हो सकते हैं। पहला, यह नया संस्थान है जहाँ छात्र-शिक्षक अनुपात कम है, जिससे पुस्तकालय में भीड़भाड़ नहीं होती और प्रत्येक उपयोगकर्ता को सुविधाजनक स्थान उपलब्ध होता है। दूसरा, संस्था का आकार अपेक्षाकृत छोटा है, जिससे पुस्तकालय भवन में पहुँचना और संसाधनों का उपयोग करना सहज होता है। तीसरा, इस संस्था में आवासीय सुविधाएं उपलब्ध हैं, जो पुस्तकालय के निकट होने के कारण छात्रों और शिक्षकों की पुस्तकालय में आगमन की सुविधा बढ़ाती हैं।

विशेष रूप से यह ध्यान देने योग्य है कि पुस्तकालय का उपयोग विभिन्न समयों में स्थिर बना हुआ है, हालांकि परीक्षा के समय में उपयोग बढ़ने की संभावित उम्मीद है, परंतु अध्ययन के दौरान जो आंकड़े जमा किए गए वे सामान्य समय के हैं, इसलिए इस बढ़ोतरी का अनुसंधान में स्पष्ट प्रतिबिंब नहीं मिला। अन्य शोधों के संदर्भ से पता चलता है कि अधिकांश छात्रों की पुस्तकालय में उपस्थिति परीक्षा तैयारी के समय में काफी बढ़ जाती है, जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि अगर यह अध्ययन परीक्षा के समय किया गया होता तो उपयोग में अपेक्षित वृद्धि दिखाई देती।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि पुस्तकालय का वातावरण अध्ययन के लिए अनुकूल और शांत है, जो उपयोगकर्ताओं के लिए एक सकारात्मक पहलू है। पुस्तकालय का शांत माहौल न केवल अध्ययन में मददगार होता है बल्कि इससे उपयोगकर्ताओं में बेहतर एकाग्रता और मनोवैज्ञानिक समर्थन भी मिलता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकालय में बैठने की पर्याप्त जगह उपलब्ध होना छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए सहायता प्रदान करता है। इस सुविधा के कारण अध्ययन के दौरान उपयोगकर्ताओं को आवश्यक आराम और स्वतंत्रता मिलती है, जिससे उनकी उत्पादकता और अध्ययन की गुणवत्ता बेहतर होती है।

पुस्तकालय उपयोग के इस पैटर्न का विश्लेषण संस्थान के शैक्षणिक वातावरण को समझने में भी मदद करता है। कम भीड़ होने और सुविधाजनक भवन के कारण छात्रों और शिक्षकों के बीच पुस्तकालय उपयोग की तीव्रता अधिक बनी रहती है। हालांकि, पुस्तकालय के संचालन समय, संसाधनों की उपलब्धता, तकनीकी समस्याएं जैसे ई-जर्नल की पहुंच में बाधाएं, और अवकाश के दिनों में बंद रहने जैसे मुद्दे कुछ हद तक उपयोग को प्रभावित करते हैं।

इस अध्ययन में पुस्तकों, पत्रिकाओं, और डिजिटल संसाधनों के उपयोग की आदतों का भी परीक्षण किया गया। पाया गया कि उपयोगकर्ता मुख्यतः अपनी पढ़ाई, शोध, परीक्षा की तैयारी, और परियोजनाओं के लिए पुस्तकालय का उपयोग कर रहे हैं। छात्र और शिक्षक दोनों ही प्रकार के संसाधनों का लाभ उठा रहे हैं, हालांकि डिजिटल संसाधनों की पहुंच को बढ़ावा देने की आवश्यकता बनी हुई है। इससे यह संकेत मिलता है कि पुस्तकालय को न केवल अपनी सामग्री का विस्तार करना होगा, बल्कि उपयोगकर्ताओं को आधुनिक संसाधनों के बारे में भी जागरूक और प्रशिक्षित करना आवश्यक होगा।

अंततः, विश्लेषण यह दर्शाता है कि एक नई मेडिकल संस्थान के पुस्तकालय में उपयोग का स्तर उच्च होने के बावजूद, वहां सुविधाओं और संसाधनों के सुधार की आवश्यकता है। पुस्तकालय के उपयोग के पैटर्न और वातावरण के इस विस्तृत अध्ययन से स्पष्ट हुआ है कि यदि संसाधनों की उपलब्धता, संचालन समय, तकनीकी सुधार और उपयोगकर्ता प्रशिक्षण पर ध्यान दिया जाए, तो पुस्तकालय की सेवाओं का प्रभाव और उपयोगिता और बढ़ाई जा सकती है। इस प्रकार, यह अध्ययन न केवल वर्तमान पुस्तकालय उपयोग की स्थिति को समझने में सहायक है, बल्कि भविष्य के सुधार के लिए ठोस मार्गदर्शन भी प्रस्तुत करता है।

5.2 पुस्तकालय आने के उद्देश्य में लिंग और विभाग का प्रभाव

अध्ययन में पुस्तकालय आने के उद्देश्यों पर लिंग और विभाग के प्रभाव का विस्तृत विश्लेषण किया गया। यह पाया गया कि 52% उपयोगकर्ता परीक्षा की तैयारी के लिए पुस्तकालय आते हैं, जो इस बात को दर्शाता है कि यहाँ अभी तक अनुसंधान-केंद्रित संस्कृति की कमी है। केवल 5% उपयोगकर्ता अनुसंधान कार्य के लिए पुस्तकालय का उपयोग करते हैं, जो चिंताजनक है, क्योंकि मेडिकल शिक्षा में अनुसंधान एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इस उद्देश्य के पीछे कई कारण हो सकते हैं, जैसे संस्थागत नीतियों में अनुसंधान को प्राथमिकता न देना, अनुसंधान संसाधनों की कमी, या छात्रों और शिक्षकों की अनुसंधान के प्रति रुचि न होना। यह अनुपात यह संकेत देता है कि संस्थान में अभी भी परीक्षा-केंद्रित शिक्षा की संस्कृति अधिक प्रबल है और अनुसंधान के लिए आवश्यक सुविधाएँ और प्रोत्साहन अभी विकसित नहीं हुए हैं।

लिंग के आधार पर विश्लेषण करने पर यह देखा गया कि छात्राएँ पुस्तकालय में अधिक अक्सर परीक्षा की तैयारी के लिए आती हैं, जबकि छात्र अनुसंधान के लिए थोड़े अधिक उपयोगकर्ता दिखाई देते हैं। यह अंतर संभवतः उनके शैक्षणिक लक्ष्यों, लिंग आधारित दबाव, या संस्थागत अपेक्षाओं के कारण हो सकता है। विभाग के आधार पर भी उद्देश्यों में अंतर देखा गया। जैसे, बेसिक साइंस विभाग के छात्र अनुसंधान के लिए अधिक पुस्तकालय का उपयोग करते हैं, जबकि क्लिनिकल विभाग के छात्र परीक्षा की तैयारी के लिए अधिक आते हैं। इसके कारण विभागीय पाठ्यक्रमों की प्रकृति, शिक्षण विधियाँ, और अनुसंधान के लिए आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता हो सकती है।

इस विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताएँ और उनके उद्देश्य लिंग और विभाग के आधार पर अलग-अलग हैं। इसलिए, पुस्तकालय सेवाओं को विभिन्न समूहों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप अनुकूलित करना आवश्यक है। जैसे, छात्राओं के लिए परीक्षा की तैयारी से संबंधित संसाधनों की व्यवस्था और छात्रों के लिए अनुसंधान के लिए आवश्यक डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इसी प्रकार, विभागीय आवश्यकताओं के आधार पर संसाधनों का वितरण और सेवाओं का विस्तार करना भी आवश्यक है।

अनुसंधान-केंद्रित संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए पुस्तकालय को न केवल अनुसंधान संसाधनों की उपलब्धता बढ़ानी होगी, बल्कि छात्रों और शिक्षकों को अनुसंधान के महत्व और उपयोग के बारे में प्रशिक्षण भी देना होगा। इससे अनुसंधान कार्य की ओर रुचि बढ़ेगी और संस्थान की शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार होगा। इसके अलावा, लिंग और विभाग के आधार पर उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं का विश्लेषण करके पुस्तकालय सेवाओं को अधिक उपयोगी और प्रासंगिक बनाया जा सकता है।

अंत में, यह विश्लेषण यह संकेत देता है कि पुस्तकालय आने के उद्देश्यों में लिंग और विभाग का विशिष्ट प्रभाव होता है, जिसे उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं को समझने और सेवाओं को अनुकूलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका मिलती है। इससे न केवल पुस्तकालय की सेवाओं की प्रभावशीलता बढ़ेगी, बल्कि छात्रों और शिक्षकों की शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी सुनिश्चित होगी।

5.3 पुस्तकालय सेवाओं के प्रति संतुष्टि का विश्लेषण

पुस्तकालय सेवाओं के प्रति उपयोगकर्ताओं की संतुष्टि का अध्ययन करने पर प्राप्त औसत संतुष्टि स्कोर 3.5 (5.0 में से) आया, जो "मध्यम" स्तर को दर्शाता है। यह संकेत करता है कि पुस्तकालय सेवाएँ पूर्ण रूप से उपयोगकर्ताओं की अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर पा रही हैं, परंतु उनमें कुछ सकारात्मक पहलू भी मौजूद हैं। सकारात्मक पक्ष पर विचार करें तो पुस्तकालय कर्मचारी को उच्चतम संतुष्टि स्कोर 3.9 प्राप्त हुआ, जिससे यह स्पष्ट होता है कि कर्मचारी उपयोगकर्ताओं के प्रति सहायक और मित्रवत हैं, जो पुस्तकालय की सेवाओं की गुणवत्ता के लिए महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, परिसंचरण सेवा (Circulation Service) को भी 3.8 की अच्छी रेटिंग मिली, जो पुस्तकालय की सामग्री प्रबंधन और ऋण प्रणाली में ग्राहकों की संतुष्टि को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि उपयोगकर्ता अपने पुस्तकालय संसाधनों को प्राप्त करने और लौटाने की प्रक्रिया को सहज और प्रभावी पाते हैं।

दूसरी ओर, पुस्तकालय की कुछ महत्वपूर्ण सेवाओं को लेकर असंतोष भी नजर आया। डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता और उपयोग के संदर्भ में उपयोगकर्ताओं ने 3.1 का अपेक्षाकृत कम संतुष्टि स्कोर दिया, जो संकेत करता है कि डिजिटल संसाधनों की पहुँच तथा गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता है। यह विशेष रूप से इस युग में महत्वपूर्ण है क्योंकि सूचना और शोध के लिए ई-रिसोर्सेज का निरंतर विकास हो रहा है। साथ ही, पुस्तकालय के संचालन समय सम्बन्धी संतुष्टि सबसे कम (2.9) रही, जो दर्शाता है कि संचालन समय उपयोगकर्ताओं की जरूरतों के अनुरूप नहीं है। अध्ययन में पाया गया कि पुस्तकालय केवल सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक ही खुला रहता है, जबकि छात्रों और शिक्षकों के लिए यह समय अपर्याप्त माना गया। विभिन्न उपयोगकर्ता समूहों ने पुस्तकालय के समय सीमा को विस्तारित करने की आवश्यकता व्यक्त की है, ताकि वे अपनी शैक्षणिक जरूरतों के अनुरूप सुविधाओं का अधिकतम लाभ उठा सकें।

शिक्षकों और छात्रों के बीच संतुष्टि में भी भिन्नता पाई गई। शिक्षकों के संतुष्टि स्तर का औसत 3.8 था, जो छात्रों के 3.3 के स्कोर से अधिक था। इसका एक प्रमुख कारण यह हो सकता है कि शिक्षकों के पास विभागीय पुस्तकालयों के अतिरिक्त संसाधनों तक व्यापक पहुँच होती है, जिससे उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति अधिक प्रभावी ढंग से हो पाती है। दूसरी ओर, छात्रों के पास सिर्फ केंद्रीय पुस्तकालय की सीमित पहुँच होती है, जिससे उनकी अपेक्षाओं का पूर्णतः सामना नहीं हो पाता, और इस कारण उनकी संतुष्टि का स्तर अपेक्षाकृत कम है।

इस विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि पुस्तकालय में सेवाओं का अलग-अलग पक्ष है, जहां कर्मचारी और परिसंचरण सेवा प्रशंसा के पात्र हैं, लेकिन डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता और पुस्तकालय के संचालन समय में प्रमुख समस्याएं बनी हुई हैं। यूजर्स को बेहतर सुविधा प्रदान करने के लिए इन चुनौतियों को दूर करना आवश्यक है। पुस्तकालय के डिजिटल संसाधनों को उन्नत कर पूरे सप्ताह 24 घंटे तक उपलब्ध कराना और संचालन समय को छात्रों और शिक्षकों के लिए अधिक अनुकूल बनाना, पुस्तकालय उपयोग और संतुष्टि दोनों को बढ़ावा देगा। इसके अलावा, तकनीकी अवसंरचना जैसे बेहतर इंटरनेट सुविधा, ई-ज्ञान साक्षरता प्रशिक्षण, और सहयोगात्मक सेवाओं को बढ़ावा देकर पुस्तकालय के प्रभाव को अधिकतम किया जा सकता है।

संतुष्टि स्कोर के इस विश्लेषण के आधार पर, पुस्तकालय प्रशासन को साथ ही साथ नीति-निर्माताओं को उपयोगकर्ता केंद्रित सुधारों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। शिक्षक और छात्रों दोनों के लिए संतोषजनक सेवाएं विकसित करने से न केवल शैक्षणिक गुणवत्ता में वृद्धि होगी, बल्कि यह अनुसंधान और अध्ययन के लिए उत्साह भी बढ़ाएगा। इस तरह के सुधार पुस्तकालय को केवल अध्ययन का स्थान नहीं बल्कि सीखने और शोध के लिए प्रेरणास्थल बनाएंगे, जिससे चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान की प्रगति सुनिश्चित होगी।

इस अध्ययन ने पुस्तकालय सेवा की गुणवत्ता का मापन करते हुए विभिन्न पक्षों का संतुलित चित्र प्रस्तुत किया है, जो भविष्य के व्यापक सुधार कार्यों के लिए एक ठोस आधार प्रदान करता है। बेहतर संसाधन प्रबंधन, विस्तारित सेवाएं एवं तकनीकी उन्नयन पुस्तकालय को और अधिक प्रभावशाली बनाने में सक्षम होंगे, जिससे समग्र शिक्षा एवं स्वास्थ्य क्षेत्र में भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

5.4 बाधाओं का गहन विश्लेषण

मेडिकल शिक्षा में पुस्तकालय के उपयोग में सबसे प्रमुख बाधा "व्यस्त समय सारणी" है, जिसे 65% उपयोगकर्ताओं ने अपनी चुनौती के रूप में बताया। यह बाधा मेडिकल शिक्षा की विशिष्ट प्रकृति को दर्शाती है, जहाँ MBBS कार्यक्रम में व्याख्यान, प्रायोगिक, नैदानिक प्रशिक्षण और अन्य गतिविधियों की भारी मांग होती है। छात्रों के पास पर्याप्त समय नहीं रहता कि वे पुस्तकालय में नियमित रूप से आ सकें, जिससे उनका पुस्तकालय के संसाधनों से लाभ उठाना सीमित हो जाता है। यह बाधा विशेष रूप से उन छात्रों के लिए गंभीर है जो अपनी शैक्षणिक और नैदानिक दायित्वों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करते हैं।

दूसरी महत्वपूर्ण बाधा "पुस्तकालय के संचालन समय में सीमा" है, जिसे 48% उपयोगकर्ताओं ने अपनी प्रमुख समस्या के रूप में उल्लेख किया। यह समस्या Government Medical College, Chandigarh और अन्य संस्थानों में भी देखी गई है, जहाँ पुस्तकालय केवल सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक खुला रहता है, जो छात्रों और शिक्षकों की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है। विशेष रूप से नई संस्थाओं में, जहाँ पुस्तकालय अपनी आंतरिक प्रक्रियाओं को विकसित कर रहा है, यह समय-सीमा उपयोगकर्ताओं के लिए और भी अधिक चुनौतीपूर्ण है। छात्रों को अपनी पढ़ाई, असाइनमेंट या अनुसंधान कार्य के लिए अतिरिक्त समय की आवश्यकता होती है, जिसके लिए विस्तारित संचालन समय अत्यंत आवश्यक है।

तीसरी प्रमुख बाधा "इंटरनेट की गति की समस्या" है, जिसे 42% उपयोगकर्ताओं ने अपनी चुनौती के रूप में बताया। यह बुनियादी ढांचे की समस्या है, जिसका समाधान केवल राज्य-स्तरीय हस्तक्षेप और बेहतर तकनीकी व्यवस्था से ही संभव है। उत्तर प्रदेश के अन्य संस्थानों में भी इस समस्या की ओर ध्यान दिया गया है, जहाँ छात्रों और शिक्षकों को ऑनलाइन संसाधनों तक पहुँचने में बार-बार समस्याएँ आती हैं। इंटरनेट की धीमी गति उनके अध्ययन, शोध और अनुसंधान कार्य को प्रभावित करती है, जिससे उनकी शैक्षणिक गतिविधियों में बाधा आती है।

इन बाधाओं का गहन विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि ये केवल संस्थागत समस्याएँ नहीं हैं, बल्कि ये मेडिकल शिक्षा की व्यवस्था, बुनियादी ढांचा और तकनीकी सुविधाओं की कमी के बारे में भी बताती हैं। व्यस्त समय सारणी की समस्या को हल करने के लिए शैक्षणिक व्यवस्था में लचीलापन लाना और छात्रों को अपनी पढ़ाई के लिए पर्याप्त समय देना आवश्यक है। पुस्तकालय के संचालन समय को विस्तारित करने से छात्रों और शिक्षकों को अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप समय मिल सकता है। इंटरनेट की गति की समस्या को दूर करने के लिए राज्य और संस्थान स्तर पर बेहतर बुनियादी ढांचा और तकनीकी सुविधाओं का विकास आवश्यक है।

इन बाधाओं को दूर करने के लिए संस्थानों को उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अपनी नीतियों और सुविधाओं में सुधार करना चाहिए। इसके लिए छात्रों और शिक्षकों की फीडबैक को सक्रिय रूप से लेना, उनकी समस्याओं को समझना और उनके सुझावों पर विचार करना आवश्यक है। इससे न केवल पुस्तकालय की उपयोगिता बढ़ेगी, बल्कि छात्रों की शैक्षणिक गुणवत्ता और अनुसंधान कार्य में भी सुधार होगा। इस तरह, इन बाधाओं का गहन विश्लेषण न केवल वर्तमान समस्याओं को उजागर करता है, बल्कि भविष्य के सुधार कार्यों के लिए एक मजबूत आधार भी प्रदान करता है।

6. सुझाव

मेडिकल कॉलेज केंद्रीय पुस्तकालय की सुविधाओं और सेवाओं में सुधार के लिए व्यापक और व्यवहारिक सुझाव आवश्यक हैं, जो छात्रों, शिक्षकों और संस्थान के लिए लाभकारी साबित हो सकती हैं। इन सुझावों को कई प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है: संचालन समय, डिजिटल बुनियादी ढांचा, संग्रह विकास, जानकारी साक्षरता, अनुसंधान को बढ़ावा देना और अंतर-पुस्तकालय सहयोग।

6.1 संचालन समय में सुधार: पुस्तकालय के संचालन समय को विस्तारित करना उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं के अनुरूप है। पुस्तकालय को कम से कम सुबह 7 बजे से शाम 9 बजे तक खुला रखना चाहिए, जिससे छात्र और शिक्षक अपनी पढ़ाई, असाइनमेंट या अनुसंधान कार्य के लिए समय निकाल सकें। शनिवार को भी पुस्तकालय को सुबह 9 बजे से दोपहर 3 बजे तक खुला रखने से छुट्टी के दिन भी अध्ययन की सुविधा मिलेगी। इसके अतिरिक्त, ई-संसाधनों तक 24/7 पहुंच सुनिश्चित करना आवश्यक है, ताकि उपयोगकर्ता अपनी आवश्यकता के अनुसार किसी भी समय ऑनलाइन सामग्री तक पहुंच सकें। यह विशेष रूप से उन छात्रों के लिए महत्वपूर्ण है जिनकी दिनचर्या व्यस्त होती है।

6.2 डिजिटल बुनियादी ढांचे में सुधार: पुस्तकालय की डिजिटल सुविधाओं को अपग्रेड करना आज के शैक्षणिक वातावरण में अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए वाई-फाई की बैंडविड्थ और कवरेज में सुधार किया जाना चाहिए, ताकि ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग सुगम और तेज हो सके। अतिरिक्त कंप्यूटर टर्मिनल जोड़ने से छात्रों को ऑनलाइन सामग्री तक पहुंचने में बाधा नहीं आएगी। इसके अलावा, ई-जर्नल, ई-पुस्तकें और डेटाबेस की सदस्यता बढ़ाई जानी चाहिए, जिससे छात्र और शिक्षक अपने शोध और पढ़ाई के लिए नवीनतम सामग्री तक पहुंच सकें।

6.3 संग्रह विकास : पुस्तकालय के संग्रह को नियमित रूप से अपडेट करना आवश्यक है, जिससे छात्रों को चिकित्सा क्षेत्र की नवीनतम और संशोधित पुस्तकें उपलब्ध हो सकें। प्रत्येक विभाग के प्रमुख से संग्रह विकास के बारे में परामर्श लेना चाहिए, ताकि विभागीय आवश्यकताओं के अनुरूप संसाधन उपलब्ध कराए जा सकें। दान कार्यक्रम को प्रोत्साहित करने से अन्य संस्थानों से पुस्तकों का दान प्राप्त किया जा सकता है, जिससे संग्रह की विविधता और गुणवत्ता में सुधार होगा।

6.4 जानकारी साक्षरता कार्यक्रम: छात्रों और शिक्षकों को डिजिटल संसाधनों के उपयोग के लिए प्रशिक्षित करना आवश्यक है। प्रत्येक नए बैच के लिए व्यापक अभिविन्यास सत्र आयोजित किए जाने चाहिए, जिसमें पुस्तकालय सेवाओं और डिजिटल संसाधनों के उपयोग की जानकारी दी जाए। नियमित रूप से डेटाबेस, ई-जर्नल और साहित्य खोज पर कार्यशालाएं आयोजित करनी चाहिए, जिससे उपयोगकर्ताओं को अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप सामग्री तक पहुंचने में सहायता मिल सके। YouTube जैसे मंचों पर पुस्तकालय सेवाओं के बारे में ट्यूटोरियल अपलोड करने से उपयोगकर्ताओं की जानकारी साक्षरता बढ़ेगी।

6.5 अनुसंधान को बढ़ावा देना: पुस्तकालय में अनुसंधान के लिए विशेष क्षेत्र बनाया जाना चाहिए, जहाँ छात्र और शिक्षक अपने शोध कार्यों को समर्पित कर सकें। अनुसंधान पद्धति पर सेमिनार आयोजित करने से छात्रों को शोध कार्य में मार्गदर्शन मिलेगा। पुस्तकालयकर्मी द्वारा अनुसंधान में सहायता उपलब्ध कराने से छात्रों को अपने शोध कार्य में सहायता मिलेगी।

6.6 अंतर-पुस्तकालय सहयोग: निकटवर्ती संस्थानों के साथ अंतर-पुस्तकालय ऋण समझौता करने से छात्रों और शिक्षकों को अन्य संस्थानों के संसाधनों तक पहुंचने का अवसर मिलेगा। डिजिटल संसाधनों की सदस्यता साझा करने से छात्रों को अधिक सामग्री तक पहुंचने का लाभ होगा।

इन सिफारिशों को लागू करने से पुस्तकालय की सेवाओं में सुधार होगा, जिससे छात्रों और शिक्षकों की शैक्षणिक और अनुसंधान आवश्यकताओं की पूर्ति सुनिश्चित होगी। इससे पुस्तकालय न केवल अध्ययन का स्थान बनेगा, बल्कि शोध और ज्ञान का केंद्र भी बनेगा।

7. निष्कर्ष

यह व्यष्टि अध्ययन कल्याण सिंह राजकीय मेडिकल कालेज, बुलंदशहर के केंद्रीय पुस्तकालय में छात्रों और शिक्षकों द्वारा पुस्तकालय संसाधनों और सेवाओं के उपयोग की एक व्यापक तस्वीर प्रस्तुत करता है। अध्ययन के मुख्य निष्कर्षों से पता चलता है कि यहाँ पुस्तकालय का उपयोग उच्च स्तर पर है, जहाँ 91% उपयोगकर्ता सप्ताह में कम से कम एक बार पुस्तकालय का दौरा करते हैं, जो भारतीय मेडिकल संस्थानों की औसत दर से अधिक है। यह उपयोग दर संस्थान के छात्र-शिक्षक अनुपात, छोटे आकार और आवासीय सुविधाओं की निकटता के कारण उच्च बनी हुई है।

पुस्तकालय के उपयोग के उद्देश्यों में सबसे अधिक 52% उपयोगकर्ता परीक्षा की तैयारी के लिए पुस्तकालय आते हैं, जबकि केवल 5% उपयोगकर्ता अनुसंधान कार्य के लिए आते हैं। यह अनुपात स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि यहाँ अभी भी परीक्षा-केंद्रित शिक्षा की संस्कृति अधिक प्रबल है और अनुसंधान-केंद्रित संस्कृति का विकास अभी बाकी है। इसके अलावा, 89% उपयोगकर्ता अभी भी प्रिंट संसाधनों का उपयोग करते हैं, जो यह दर्शाता है कि डिजिटल संसाधनों का उपयोग अभी पूरी तरह से नहीं हुआ है।

पुस्तकालय सेवाओं के प्रति उपयोगकर्ताओं की संतुष्टि का औसत स्कोर 3.5/5.0 है, जो "मध्यम" स्तर को दर्शाता है। इसका अर्थ है कि सेवाएँ अच्छी हैं, लेकिन उनमें और सुधार की गुंजाइश है। व्यक्तिगत सेवाओं, जैसे पुस्तकालय कर्मचारियों की सहायता और परिसंचरण सेवा, को उच्च संतुष्टि मिली है, जबकि डिजिटल संसाधनों और पुस्तकालय के संचालन समय को लेकर असंतुष्टि व्यक्त की गई है। शिक्षकों की संतुष्टि (3.8) छात्रों (3.3) की तुलना में अधिक है, जो उनके पास विभागीय पुस्तकालयों तक अतिरिक्त पहुँच होने के कारण है।

अध्ययन में उपयोगकर्ताओं द्वारा व्यक्त की गई प्रमुख बाधाएँ व्यस्त समय सारणी (65%), संचालन समय की सीमा (48%) और इंटरनेट गति की समस्या (42%) हैं। ये बाधाएँ मेडिकल शिक्षा की व्यस्त प्रकृति, नई संस्था की आंतरिक प्रक्रियाओं की अपूर्णता और बुनियादी ढांचे की कमजोरी को दर्शाती हैं। इन बाधाओं को दूर करने के लिए तत्काल, मध्यम और दीर्घ-अवधि के कदमों की आवश्यकता है।

नई मेडिकल संस्था के संदर्भ में निम्नलिखित सिफारिशें दी जाती हैं: तत्काल कदमों में संचालन समय को विस्तारित करना, जानकारी साक्षरता प्रशिक्षण शुरू करना और Wi-Fi बुनियादी ढांचे में सुधार करना शामिल है। मध्यम-अवधि के कदमों में संग्रह विकास में तेजी लाना, अतिरिक्त पुस्तकालय कर्मचारियों की नियुक्ति और विशेषज्ञ परामर्श लेना शामिल है। दीर्घ-अवधि के कदमों में अनुसंधान संस्कृति को बढ़ावा देना, अंतर-पुस्तकालय सहयोग स्थापित करना और डिजिटल पुस्तकालय को पूरी तरह विकसित करना शामिल है।

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि नई मेडिकल संस्थाओं में पुस्तकालय सेवाओं को उपयोगकर्ताओं की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप अनुकूलित करना और बुनियादी ढांचे में सुधार करना आवश्यक है। इससे न केवल शैक्षणिक गुणवत्ता बढ़ेगी, बल्कि अनुसंधान और ज्ञान के विकास को भी बढ़ावा मिलेगा। इस प्रकार, यह अध्ययन न केवल वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करता है, बल्कि भविष्य के सुधार के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है।

यह अनुसंधान दर्शाता है कि नई मेडिकल संस्थाओं में पुस्तकालय सेवाएं चुनौतीपूर्ण हैं, लेकिन सही योजना, निवेश, और प्रबंधन के साथ ये संस्थाएं उत्कृष्ट पुस्तकालय सेवाएं प्रदान कर सकती हैं। कल्याण सिंह राजकीय मेडिकल कालेज को इन सुझावों को कार्यान्वित करके अपने पुस्तकालय को भारत के सर्वश्रेष्ठ मेडिकल पुस्तकालयों में से एक बनाने का अवसर है।

संदर्भ

- *Government Medical College, Chandigarh. (2012). A Study About Library Usage by Undergraduate Medical Students.* National Journal of Clinical Medicine, *2(3), 45-52.*

- *Era University. (2018). A Study on Usage of Automated and Digital Library Resources by Medical College Students.* International Journal of Creative Research Thoughts, *1(8), 456-469.*
- *Ingole, S. A., & Chavan, S. (2024). Analyzing the Awareness and Utilization of Digital Resources by the Library Users of Selected Medical Deemed Universities in Maharashtra.* International Journal of Academic Library Practice, *14(2), 78-95.*
- *Kalyan Singh Government Medical College. (2024). Library Services Annual Report 2024-25. Bulandshahr: KSGMC.*
- *Maharashtra Medical College Study. (2025). Library Resources and Services Usage by Undergraduate and Postgraduate Medical Students.* Indian Journal of Public Health Research and Development, *16(1), 234-245.*
- *National Medical Commission. (2023). Regulations on Medical Education in India. New Delhi: NMC.*
- *Regmi, P. R., Aryal, N., Kurmi, O., & Koirala, A. (2016). Guide to the Design and Application of Online Questionnaire Surveys.* Kathmandu University Medical Journal, *14(56), 169-175.*
- *Esson, R. M. (2009). How Good Is Survey Design in Medical Libraries? A Systematic Review of User Surveys.* Library, Information and Research, *33(1), 10-28.*
- *Ata, M., et al. (2020). Library Usage by the Medical Students of a Tertiary Healthcare Institution.* Community Medical Student Journal, *8(2), 112-125.*
- *Devi, D. (2013). Library Services in Medical and Paramedical Colleges in Assam. In* 9th International CALIBER Proceedings. *Gandhinagar: INFLIBNET Centre.*

CITATION:

Kumar, S., & Kaur, G. (2025). कल्याण सिंह राजकीय मेडिकल कालेज, बुलंदशहर के शिक्षकों और छात्रों द्वारा पुस्तकालय संसाधनों और सेवाओं का उपयोग: एक व्यष्टि अध्ययन. INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS IN SOCIAL SCIENCES, 1(2), 162–179.